वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

मानवतावादी विचारों की वर्तमान परिपेक्ष्य में प्रासंगिकता

[1]रामप्रसाद रजक (शोधार्थी)
[2]डॉ. दिनेश मिश्रा (शोध निर्देशक)
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर

शोध सार

आदिकाल में मानव बहुत सुखी एवं संतोषी प्रकृति का था उसकी आवश्यकताएँ सीमित एवं संयमित थी। आधुनिक सुविधाओं से लैस इस विज्ञान के युग ने मनुष्य को इस प्रकार का बना दिया है, आज जैसें- जैंसे उसकी आय बढ़ रही है। उसकी आवश्यकताएँ भी बढ़ती जा रही है, जिससे वह गलत तरीकों से धन कमाने लगा है। वह यह नहीं देखता है, कि कोई काम गलत है, या सही, उसे तो बस रूपये आने से मतलब रहता है, इससे किसकों हानि हो रही है, या किसको क्षति पहुँच रही है इससे उसका कोई लेना देना नहीं है। मनुष्य की यही वृत्ति समाज में अराजकता व अव्यवस्था को जन्म देती है। वह अधिक स्वार्थी होता चला जा रहा है। वह मशीन में लगे एक पुर्जे की भाँति काम करता है, उसमें संवेदन शीलता की कमी होती जा रही है। वह किसी का सहयोग करने की बजाय विरोध करने लगता है। उसमें नैतिकता, ईमानदारी, परोपकार, सत्यवादिता, न्यायप्रयिता, समानता तथा सहयोग जैसी कल्याण कारी भावनाओं की कमी होती जा रही है।

प्रस्तुत शोध पत्र इस बात की जॉच करेगा कि मानवतावादी गुणों की वर्तमान में क्या स्थिति है। यदि कोई बुराई समाज में फैली है तो उसके क्या कारण है, तथा उन्हें दूर कैसे किया जाय। मानवतावाद की पुन: स्थापना कैसे की जाये, नये लोगों को कैसे मानवतावादी बनाया जाय' तथा उन्हें विकास की मुख्य धारा में सम्मलित कैसे किया जाये जिससे व्यक्ति केवल भीड़ न बनकर इस समाज के सक्रिय एवं उपयोगी सदस्य बने, उसमें ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की भावना हो, जो भारत के लिए कई विविकानंद जैसे युवक बनाकर तैयार कर दे। जो मॉ भारती के चरणों में सहर्ष अपना शीश भी चढ़ाने के लिए तत्पर रहे। इस तरह देश में रामराज्य धरती पर आ जायेगा।

वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

खोज शब्द

मानवता, परिप्रेक्ष्य, प्रसंगिकता, स्थिति, बसुधैव कुटुम्बकम, पुन:स्थापना, आत्म संतोषी, कल्याणकारी, न्यायप्रयिता, चिंतन, आयुध, अस्तित्व भयभीत, नीरसता, परलोक, इहलोक, गृसित।

प्राक्कथन

विश्व की जनसंख्या तेजी से बढ़ती जा रही है। चारों ओर भीड़ ही भीड़ दिखाई देती है। हर जगह समाज, राष्ट्र समूह, उद्योग, संगठन जैसे शब्द सुनाई देते हैं इस कोलाहल में व्यक्ति की चीत्कार भी सुनाई नहीं देती है, लगता है व्यक्ति-मानव न होकर निर्जीव लाश बन गया है। वह समाज का पुर्जा मात्र है। उसको अपने अंदर एक खाली पन का आभास होने लगा है, एक तरफ विज्ञान बड़े-बड़े दावे करता है, चाँद पर झण्डे गाडने की बात करता है। तो दूसरी ओर लोगों की दयनीय स्थिति है। समाज में यह विसंगति क्यों हैं? विज्ञान दावा करता है कि मनुष्य बहुत सुखी है, किंतु वास्तविक स्थिति कुछ और ही है' जो आत्मा को अंदर ही अंदर कचोटती है जो काँटे की नोक की भाँति चुभती है। मानवतावादी दर्शन का दावा है, कि वह मनुष्य के जीवन को वास्तविक सुख देने आया है, वह मानव को केन्द्र में रखकर दर्शन का विकास करता है। तथा उसे शिक्षा प्रणाली में सम्मलित करने की बात करता है, जिससे मानव जीवन में सुखी एवं शांत बन सके तथा अपना जीवन सार्थक कर सके।

साहित्य समीक्षा

मानवतावाद के क्षेत्र में पहले किये गये कार्यों की समीक्षा उपलब्ध साहित्य का अध्ययन करने के पश्चात कर सकते हैं, उनमें से कुछ इस प्रकार हैं- पुस्तक- '' मानवतावाद और शिक्षा पूरब और पश्चिम के देशों में शीर्षक से उपलब्ध है, जिसके अनुवादक यदुवंशी जी है, उसे संयुक्त राष्ट्र की 'शिक्षा विज्ञान और संस्कृति' संस्था के सहयोग से तथा भारत के राष्ट्रीय कमीशन के तत्वाधान में भारत में प्रकाशित कराया गया है। अंग्रेजी संस्करण सन् 1953 तथा हिंदी प्रथम संस्करण 1956 में प्रकाशित कराया गया। जिसमें विचार विमर्श रिर्पोट निष्कर्ष तथा सिफारिशों सम्मलित हैं, इसमें भारत के गोलमेज चर्चा में भाग लेने की बात का वर्णन किया गया है।

वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

जिनमें पूरब पश्चिम के संबंधो के कुछ पहलू वर्णत है। टी डिम्टी के विचार पश्चिम के देशों में मनुष्य की संकल्पना ''शिक्षा दर्शन संकल्पना, आस्वीदास का ''भारतीय और पश्चिम दर्शन'' में क्रमिक प्रगति का वर्णन है। एच.फान. ग्लास ने 'पूर्व तथा श्रेष्ठ शिक्षा की समस्याएँ' नाम से पुस्तक प्रकाशित की है, जिसमें मानवता वाद की उन्नति का वर्णन है। प्रो. हुमायूँ कबीर की पुस्तक '' देशी व विदेशी विचारों में घर्षण'' शीर्षक से उपलब्ध है, जिसमें मानवतावाद की तुलना अन्य इसी प्रकार के विचारों से की गई है, बाई कानकूरा द्वारा ''नये मानवतावाद की ओर शीर्षक से मानवतावादी लक्षणों तथा विकास वर्णित किया गया है, नेहरूजी के उद्बोधन के आख्यान में भी उल्लेखनीय है। जिनमें गोलमेज समीक्षा लिखी गई है। पुस्तक मानववाद तथा मानवतावाद'' के लेखक डॉ. बृजभूषण शर्मा (1660) ने लिखा है, कि 'मानववाद तथा मानवतावाद' में क्या अंतर है साथ ही मानव अस्तित्व एवं सर्वोच्च जीवन पद्धति की खोज स्व कल्याण एवं पर कल्याण की उत्पत्ति का वर्णन किया है, धर्म मानवतावाद तथा प्रजातंत्र का वर्णन है। भारतीय मानवतावादी विचाराकों में श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर महात्मागांधी, डॉ. राधाकृष्णन, श्री अरविंद, श्री गोपाल कृष्ण गोखले आदि हैं। जिन्होंने मानवातावाद को एक सर्वश्रेष्ठ विचार धारा के रूप में प्रतिपादित किया है।

मानवतावादी जीवन दृष्टि 'आधुनिक परिप्रेक्ष्य' में लेखिका श्रीमति कृष्णा झरे, हेमवती नंदन बहुगुणा विवि. गढ़वाल ने मानवता वाद का समग्र अध्ययन प्रस्तुत किया है, जिसमें मानवतावादी जीवन दृष्टि से व्यष्टिगत और समष्टिगत जीवन विकास का आदर्श निहित है, मानव को इस धरती पर अति विशिष्ट माना गया है। जिसकी विशिष्टिता को सिद्ध करने में लोग दिन रात मेहनत करते हैं। मनुष्य के जीवन में अपने विकास के साथ-साथ किस तरह विचारों और भावनाओं में एक रूपता व सामंजस्य का व्यापक रूप प्रकट हो गया है, वही मानवतावादी जीवन दृष्टि का संवाहक यह जीवन दृष्टि सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक रूप से अति व्यापक है। मानवीय जीवन में कई ऐसे पक्ष् है जो मानवतावादी दृष्टि का सृजन करते है. जैसे नैतिकता, धार्मिकता, दार्शनिकता, आध्यामिकता इन साहित्यों के अध्ययन के पश्चात् ज्ञात हुआ कि प्रत्यक्ष लाभों की बात किसी ने नहीं बताई है जो इस शोध के माध्यम से प्रस्तुत की जायेगी।

वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

शोध विधि

इस अध्ययन में वर्णनात्मक, विवेचनात्मक एवं विवरणात्मक विधियों का प्रयोग किया गया है, साथ ही अवलोकन द्वारा मान लिया गया है, कि मानवता वादी सिद्धातों की भारतीय शिक्षा प्रणाली में सम्मलित किया गया है, आंकड़ों व तथ्यों का संकलन प्राथमिक एवं द्वितियक संकलन पद्धति से किया गया है। आंकड़ों को चुनने में निदर्शन विधि का प्रयोग किया गया है। मानवता वादी विचार को पूर्व उपलब्ध पुस्तकों व इतिहास से लिया गया है जनसंख्या नमूना विधि का प्रयोग करते हुए प्राथमिक रूप से एकत्र आंकडों द्वारा किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध का उद्देश्य मानवतावाद जैसी पवित्र-दैवीय भावना को प्रकाश में लाना तथा उसका प्रचार-प्रसार करना है, मानवतावाद के प्रत्यक्ष लाभों को बतला कर लोगों को उसकी ओर आकर्षित करना है। ताकि अधिक से अधिक मानवता वादी धर्म का पालन करें। आज नैतिकता के मानवीय मूल्यों ईमानदारी, सदाचार- दया सहिष्णुता समानता का व्यवहार, परस्पर सहयोग आदि को जागृत करने की महती आवश्यकता है। देश में व्याप्त सांम्प्रदायिकता, अन्याय व अत्याचार को समाप्त करने की आवश्यकता है जो मानवता वाद द्वारा ही हो सकती है औद्यौगीकरण, शहरीकरण के दुष्परिणामों से बचने के लिए मानवतावाद की शरण में आना आवश्यक है। भारतीय लोकतंत्र आज कमजोर हो रहा है। उसको मजबूती देने का कार्य मानवतावाद ही करेगा' आज की दूषित राजनीति को सुधारना मानवतावाद द्वारा ही संभव है।

भारतीय शिक्षा प्रणाली के संबंध में यह परिकल्पना की जाती है, कि इसमें मानवतावादी सिद्धातों की कमी है, अथवा नहीं है इस तथ्य की पुष्टि करना है, भारतीय पाठ्यक्रम में मानवता वादी विचार सम्मिलित है या नहीं हैं। छात्रों में नैतिक गुणों की कमी है या नहीं हैं। ऐसा इसलिए कि वर्तमान में विशेषत: नवयुवकों में मानवतावादी गुणों जैसे- नैतिकता, दया, धर्म, सहयोग, कर्तव्य परायणता, सदाचार, ईमानदारी, महिलाओं के प्रति सदाचार की कमी होती जा रही है।

वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

मानवतावाद का जन्म

इतिहास इस बात का साक्षी है, कि मनुष्य ने जब-जब संगठित होकर हुंकार भरी है, तब-तब अन्याय, अनाचार एवं अत्याचार का खातमा हुआ है। आदिकाल में मनुष्य के जीवन में 'परलोक' तत्व की प्रधानता थी लोगों का जीवन परलोक की भावना से नियंत्रित होता था' तब सब कुछ ठीक था, कालान्तर में लोग परलोक को छोड़कर इहलोक की भावना से गृसित हो गये, उनके जीवन में पैसा महत्वपूर्ण होने लगा' तब नव जागरण काल आया 14 वीं से 16 वीं सदी के मध्य का काल पूरे यूरोप में पुर्नजागरण काल के रूप में जाना जाता है' तभी शिक्षा के क्षेत्र में एक क्रांति कारी विचार का जन्म हुआ, जिसे मानवतावाद के नाम से जानते हैं। सर्वप्रथम ब्रूवेकर ने अपनी पुस्तक मानवता वादी धार्मिक शिक्षा में इसका उल्लेख किया' उस समय चारों और युद्ध एवं विद्रोह की स्थिति थी, जिससे मानवता वादी चिंतन धारा का विकास हुआ जिसने मानव को केंद्र में रखकर सोचना आरंभ किया, उन्होंने कहा कि मनुष्य ही सब कुछ है वह किसी का न होकर सम्पूर्ण की पहिचान है'। मानवतावाद अंग्रेजी के Humanism शब्द का हिंदी अनुवाद है, जिसका अर्थ ''मनुष्य की शिक्षा'' से लिया जाता है मानवता वाद मानवीय गुणों में विश्वास करता है।[2] मानव की स्वतंत्रता तथा कल्याण चाहता है' मनुष्य में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं होना चाहिए, यह ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की भावना पर आधारित है, अर्थात् मानवीय उच्चतर मूल्यों को मानवतावाद कहा जाता है' स्वार्थ से ऊपर उठकर दूसरे के हित में कार्य करना परस्पर मेलजोल से रहना, एक दूसरे की स्वतंत्रता का सम्मान करना है, समानता तथा परस्पर लाभ के सिद्धात पर कार्य करना ही मानवतावाद है। हिंदी में मानवतावाद तीन शब्दों से मिलकर बना है। मानव+ता+वाद मानव का अर्थ मनुष्य या इंसान है जिसके पीछे ता प्रत्यय लगाने से मनुष्यता की भावना को और परिपुष्ट बना दिया गया है, ऐसा वाद अर्थात् विचार ही मानवतावाद है। ऐसा विचार एवं भावना जो सबकी भलाई व कल्याण करता हो वही मानवतावाद है।

मानवतावाद के प्रमुख सिद्धांत

1. मानव ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना है
2. मनोभावनाएँ उच्च से उच्चतर होनी चाहिए।
3. मनुष्य का विकास स्वयं उसी पर निर्भर करता है।

वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

4. यह संसार मिथ्या या भ्रम नहीं बल्कि शाश्वत सत्य है।
5. संसार संवेगात्मक भावनाओं से भरा हुआ परिवर्तनशील है
6. मनुष्य सबसे शक्तिशाली है, वह निरीह प्राणी नहीं है।
7. मनुष्य सबसे सुंदर है इस संबंध में कविवर सुमित्रानंदन पंत जी की पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं- ''सुंदर है विंहग, सुंदर है सुमन। मानव तुम सबसे सुंदर।।
8. व्यक्ति के अंदर उच्च से उच्चतर गुणों का विकास होना चाहिए।
9. शिक्षा व्यावहारिक तथा बालोपयोगी होनी चाहिए।
10. मनुष्य को ''बसुधैव कुटुम्बकम्'' की भावना में कार्य करना चाहिए।
11. मनुष्य की मूलभूत प्रवृत्तियाँ शाश्वत है, किंतु मनुष्य भोजन-नींद के अलावा अन्य कार्य भी करता है।
12. मानवतावाद स्वतंत्रता तथा समानता के सिद्धांतों का समर्थन करता है' जाति, धर्म, लिंग और आर्थिक स्थिति संबंधी भेदभाव समाज में नहीं होने चाहिए।
13. मानवतावाद विज्ञान और तर्क को बढ़ावा देता है, तथा रूढिवादिताओं का विरोध करता है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मानवतावाद की प्रासंगिकता

1. **समाज की दृष्टि से उपयोगिता -** वर्तमान समाज में आज भी अनेक प्रकार की रूढ़ियां तथा जाति, धर्म, लिंग आधार पर भेद भाव मौजूद है, मानवतावाद लोगों को यह सभी भेद भाव हटा कर समानता लाने की बात करता है, यह समाज में समानता लाकर सार्वभौमिक विकास का मार्ग प्रशस्त करता है।
2. **धार्मिक दृष्टि से उपयोगिता -** मानवता वाद धार्मिक भेद भाव से दूर रहकर धार्मिक सहिष्णुता से रहने की बात करता है, इस समय धार्मिक तनाव भारत में बढ़ रहा है, जिसे मानवतावाद दूर करने का प्रयास करता है, जो शांति एवं सदभाव से कार्य करने के लिए प्रेरित करता है। तथा '' सर्वधर्म समभाव'' को बढ़ावा देता है।
3. **राजनैतिक दृष्टि से उपयोगिता -** मानवतावाद लोकतंत्र एवं समानता का समर्थक है, यह सभी को समान अवसर देने की बात करता है, राजनैतिक तानाशाही किसी भी स्थिति

वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

में सहन नहीं की जायेगी। यह सामाजिक उपयोगितावाद तथा भौमिक विकास पर बल देता है, सरकार सभी नागरिकों के लिए समान रूप से सुविधाएँ लाएगी।

4. **मानवाधिकारों का संरक्षण -** इस समय मानवाधिकारों का हनन सर्वाधिक हो रहा है, व्यक्ति का महत्व कम होता जा रहा है, समाज और राष्ट्र के अस्तित्व को सर्वोपरि माना जा रहा है। मानवतावाद व्यक्ति के महत्व तथा उसके अधिकारों की रक्षा करता ,है वह मानता है, कि व्यक्ति का विकास ही समाज का विकास है।
5. **सत्य का मार्ग दर्शक -** मानवतावाद लोगों को सच्चाई के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करता है, आज जब दुनिया फेंक न्यूज, अफवाहों तथा अंधविश्वासों से भरी पड़ी है, व मानवतावाद लोगों को सच्चाई तथा धर्म एवं सत्य का मार्ग बताता है, तथा लोगों के बीच मानवता की मशाल जलाने का काम करता है।
6. **जलवायु परिवर्तन एवं पर्यावरण संरक्षण -** आज न वर्षा समय से होती है, और न ठंडक या गर्मी भी समय से नही होती सभी मौसम एक दूसरे का अतिक्रमण कर रहे हैं। मानवतावादी विचार मनुष्य को प्रकृति एवं पर्यावरण के साथ संतुलित होकर कार्य करने की सलाह देता है, अपना जीवन सादा तथा मितव्ययी रखने की बात कहता है।

सारणी- यहाँ एक तालिका प्रस्तुत है जो छतरपुर शहर को एक प्रतिष्ठित विद्यालय की है, जिसमें छात्र-छात्राओं द्वारा गरीब एवं असहाय लोगों की मदद के लिए कपड़े एवं अन्य का दान दिया गया है, यह सूची शिक्षा से मानवता वाद के सम्मलित होने की पुष्ट करती है। बताती है कि मानवता अभी कम अवश्य हुई है किंतु समाप्त नहीं हुई है।

सारणी नं.-1

छतरपुर नगर के महर्षि विद्या मंदिर के विद्यार्थियों द्वारा दान की संख्या एवं प्रतिशत

कक्षा	कुल छात्र संख्या	दावी छात्रों की संख्या	प्रतिशत
5	200	150	75.00
6	140	100	71.42
7	175	112	64.00
8	188	142	75.53
9	142	120	84.50
10	190	150	78.94
11	160	130	81.25
12	150	140	93.33

स्त्रोत-व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित।

7. **सारणी का विश्लेषण** - इस सारणी में एक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों द्वारा दिय गये कपड़ों एवं अन्न दान का विश्लेषण प्रतिशत में किया गया है। तालिका में कक्षा 5 में विद्यालय में दर्ज कुल छात्र 200 हैं जिनमें 150 छात्रों ने कपडा और अन्नदान दिया जिसका 75 % रहा इसी प्रकार कक्षा 6 में 140 छात्र है जिनमें से 100 छात्रों ने दान दिया इसका प्रतिशत 71.42 रहा कक्षा 7 में कुल छात्र संख्या 175 है, जिनमें से 112 छात्रों ने दान दिया इनका प्रतिशत 64 % रहा कक्षा 8 में 188 छात्रों में से 142 ने दान दिया जिसका प्रतिशत 75.53 रहा कक्षा 9 के 142 छात्रों में से 120 ने दान दिया जिसका प्रतिशत 82.5;0 रहा कक्षा 10 में 190 में से 150 छात्रों ने दान दिया इनका प्रतिशत 78.50 प्रतिशत रहा इसी प्रकार कक्षा 11 में 160 छात्रों में से 130 ने दान दिया इसका प्रतिशत 81.25 प्रतिशत रहा कक्षा 12वीं में 150 में से 140 छात्रों ने दान दिया इसका प्रतिशत सबसे अधिक 93.33 प्रतिशत रहा, इस तालिका का अवलोकन करने पर सिद्ध होता है कि जैसे जैसे छात्रों में आयु का स्तर बढ़ता है। उनमें मानवतावादी प्रवृत्तियॉं बढ़ती दर से दिखाई देती है। छोटी कक्षाओं में दान का प्रतिशत कम था। क्योंकि यहॉं छात्रों में इन भावनाओं के प्रति चेतना समझ कम पाई जाती है। जो छात्रों के बढ़ते हुए अधिगम स्तर को दर्शाती है।

निष्कर्ष

इस अध्ययन से स्पष्ट है कि मानवतावादी विचार पाठ्य क्रम में सम्मलित है, भाषा विषयों में से प्रेरक प्रसंग कहानियॉं व नाटक तथा अन्य पाठ्य वस्तुएँ आज भी सम्मलित किये जाते हैं, जो छात्र-छात्राओं को मानवता वादी गुणों दया, सहानुभूति, परोपकार, परस्पर सहयोग, सत्य धर्म, न्याय, निष्ठा, कर्म शीलता, वीरता, साहस आदि महत्वपूर्ण मानवतावादी गुणों की शिक्षा देते हैं, यह भी देखा गया कि जैसे-जैसे छात्रों की समझ बढ़ती है। उनमें मानवतावादी भावनाएँ बढ़ते हुए दर से पाई जाती है, अत: यह परिकल्पना कि भारतीय पाठ्यक्रम में मानवतावाद सम्मलित नहीं है, या लोगों मे मानवतावाद की कमी पाई जाती है निराधार सिद्ध होती है। भारतीय शिक्षा

वर्ष-1, अंक-4, जुलाई - सितम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

प्रणाली विशेषत: नई शिक्षा प्रणाली की भूरि-भूरि प्रशंसा की जाती है, कि वह बहुत सटीक तथा भारत की वर्तमान दशाओं के अनुरूप पूर्णत: खरी है।

संदर्भ सूची

1. पाण्डेय डॉ. रामा शकल '' शिक्षा के दार्शनिक सिद्धांत
2. पाण्डेय डॉ. राम शकल'' उदीप मान भारतीय समाज में शिक्षक''
3. कुमार डॉ. धर्मेन्द्र '' शिक्षा के दार्शनिक पक्ष''
4. शमा डॉ. बृजभूषण (1978) ''मानवतावाद तथा मानवतावाद''
5. यदुवंशी (1953) '' मानवतावाद और शिक्षा पूरब और पश्चिम के देश'
6. झारे कृष्णा 2013 '' मानवतावादी जीवन दृष्टि आधुनिक परिप्रेक्ष्य में''
7. कटारे विनोद भोपाल'' नव्यवेदांत की मानवतावादी दृष्टि''
8. सडाना आशोक कुमार और जगदीश प्रसाद- जनवरी 2018 '' मानवतावादी चेतना''

SKU SHODH SANCHAR शोध संचार